Training Programme
on
"Climate Change and Forests"
For Scientists of ICFRE
31 January- 04 February 2011
Organized by:
Biodiversity and Climate Change Division
Indian Council of Forestry Research and Education, Dehradun
Venue: Scientist Hostel, FRI, Dehradun

शिक्षा संदर्श

प्रस्तावना

राष्ट्रीय कृषि आयोग ने 1976 की अपनी रिपोर्ट में विश्वविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के कार्यक्रमों के लिए वानिकी शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने की सिफारिश की थी। प्रारंभ में वानिकी शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों को भा.कृ.अ.प. द्वारा अवमुक्त अनुदान के जरिए सहायता दी जाती थी। भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् को स्वायत्ता प्रदान किए जाने के पश्चात शिक्षा निदेशालय के उद्देश्य के अनुसार भा.वा.अ.शि.प. को राज्यों और केंद्रीय विश्वविद्यालयों के जरिए देश में वानिकी शिक्षा को प्रतिष्ठित करने का दायित्व सौंपा गया ताकि तकनीकी क्षमताएं बढ़ाई जा सकें और स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर वानिकी शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों के वानिकी संकायों की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया जा सके। भा.वा.अ.शि.प. का महत्वपूर्ण अंग होने के कारण शिक्षा निदेशालय, वन अनुसन्धान संस्थान समविश्वविद्यालय को वानिकी की उच्च शिक्षा हेतु एक शानदार संस्थान के रूप में परिपुष्ट करने का कार्य भी करता है। आधारभूत संरचना की कमियों को दूर करने के लिए शिक्षा निदेशालय द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयों को सहायता अनुदान के रूप में आर्थिक मदद दी जाती है। शिक्षा निदेशालय भा.वा. अ.शि.प. के अन्य क्रियाकलापों में पाठ्यक्रम में निरंतर सुधार करते हुए वानिकी शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करना और वानिकी में संरक्षण की सुव्यवस्थित पद्धति के जरिए गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु संरचना तैयार करना शामिल है, ताकि वानिकी शिक्षा और भा.वा. अ.शि.प. की अनुसन्धान पद्धति में समन्वय हो सके और आपसी तालमेल परिपुष्ट करने के उपरांत प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के संकायों एवं विद्यार्थियों के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया जा सके। इस प्रकार, वानिकी के विभिन्न क्षेत्रों को मुख्य धारा में लाने के लिए नेटवर्क स्थापित किया जा सकेगा, जिससे योग्य और प्रतिभावान लोग, वानिकी व्यवसाय के प्रति आकर्षित होगें, परिषद् तथा वानिकी क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर

क्षमता वृद्धि होगी और मंत्रालय के समक्ष कारगर अनुसन्धान सहायता नीति प्रस्तुत की जा सकेगी।

वानिकी शिक्षा की प्रक्रियाएं

अधिदेश के अनुसार काम करते हुए, निदेशालय द्वारा वानिकी शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उन्नत करने और विश्वविद्यालयों में पठन–पाठन के स्रोतों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने हेतु आधारभूत संरचना तैयार की जा रही है जिसमें ई–कंसोर्टियम के जरिए पुस्तकें और जर्नलों का प्रापण करना और सूचना पद्धतियों को सक्षम बनाना शामिल है। इसके अतिरिक्त प्रक्रिया में शामिल हैं:

शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए सुव्यवस्थित आई टी मुहैया कराना।

संरक्षण की उचित पद्धति अपनाई जा रही है। वानिकी शिक्षा देने वाले सभी विश्वविद्यालयों के संरक्षण के तहत लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। प्रत्येक विश्वविद्यालय की भविष्य की संवृद्धि को ध्यान में रखते हुए सांस्थानिक प्रबंधन, वित्तीय संसाधन आवंटन और उपयोजन, भौतिकीय आधारभूत संरचना, संकाय और स्टॉफ, विद्यार्थियों के संबंध में प्रोफाईल, कोर्स वितरण, सह–शिक्षोत्तर और संबंधित क्रियाकलापों और अनुसन्धान तथा विकास के संबंध में स्पष्ट दिशा निर्देश विकसित किए जा रहे हैं।

क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप पाठ्यक्रम में आवधिक संशोधन और उच्चीकरण किया जा रहा है, जिसमें दायित्वधारियों की व्यापक भागीदारी और दोनों परिषदों (भा.कृ.अ.प. और भा.वा.अ.शि.प.) की व्यापक रूप से सहमति हो।

वानिकी शिक्षा के लिए पूंजी निवेश निधि तैयार करते हुए आधारभूत संरचना की कमियों को दूर करने में सहायता की जा रही है और साथ ही, विहित दिशा निर्देशों के अनुसार राज्यों को इस प्रकार के निवेशों हेतु आकर्षित किया जा रहा है।

वानिकी व्यवसायों के नियोजन में वृद्धि करना और उचित स्थापन सुनिश्चित करना।

क्षेत्र की आवश्यकतानुसार, क्षमता वृद्धि पर रेंज कार्यक्रम विकसित करना।

वानिकी के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सामंजस्य बनाने के लिए संकायों और विद्यार्थियों का आदान–प्रदान करने हेतु नेटवर्क तैयार करना।

भा.वा.अ.शि.प. में नीति अनुसन्धान समिति की मेजबानी करते हुए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की नीति अनुसन्धान की सहायता देना और साथ ही मंत्रालय को संस्थानों की नीति अनुसन्धान अध्ययनों से अवगत कराना।

मुख्य प्रशिक्षण संगठन के रूप में भारतीय वन सेवा फेज–III के सेवा कालीन निष्पादन हेतु अभिकल्प विकसित करना।

वानिकी शिक्षा

देश में वानिकी शिक्षा को प्रख्यापित करने के लिए शिक्षा निदेशालय द्वारा विश्वविद्यालयों को सहायता अनुदान दिया जा रहा है। इसके लिए भा.वा.अ.शि.प. द्वारा दस विश्वविद्यालयों को 2010–11 के वित्तीय वर्ष में ` 204.088 लाख की राशि अवमुक्त कराई गई। दस विश्वविद्यालयों से उपयोजन प्रमाणपत्र प्राप्त किया गया और चौदह विश्वविद्यालयों को वर्तमान वित्त वर्ष में उनके पास बची हुई रकम को खर्च करने हेतु वैध स्वीकृति प्रदान की गई।

विश्वविद्यालयों को वानिकी शिक्षा में गुणवत्ता नियंत्रण की नई शुरूआत के रूप में, भा.वा.अ.शि.प. से संरक्षण प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। नौ विश्वविद्यालयों के संबंध में सरंचना प्रक्रिया पूर्ण हो गई है और प्रमाणपत्र जारी कर दिए गए हैं। नौ अन्य विश्वविद्यालयों से संरक्षण प्राप्त करने के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

एच आर डी की शुरूआत

वैज्ञानिक कर्मियों की क्षमतावृद्धि के लिए कई प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थानों में एच आर डी की शुरूआत के रूप में ग्यारह प्रशिक्षण कार्यक्रम (एम सी टी के भाग– III के एक प्रशिक्षण सहित) आयोजित किए गए जिनमें एम सी टी के 60 भागीदारों सहित 207 भागीदारों को आठ संस्थानों में प्रशिक्षित किया गया।

वैज्ञानिकों को व्यापक रूप से राष्ट्रीय पहलुओं से अवगत कराने हेतु राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और विचारगोष्ठियों में भाग लेने के लिए, परिषद् स्तर पर 71 स्वीकृतियां प्रदान की गई।

वैज्ञानिक संवर्ग को अतिआवश्यक अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं की जानकारी देने हेतु विदेश जाने के लिए 44 मामलों में सुविधा दी गई, जिन्हें अंततः भारत सरकार द्वारा अनुमोदित किया गया और कई स्रोतों से निधिकरण किया गया।

भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य सेवाकालीन प्रशिक्षणः

भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य सेवाकालीन प शिक्षण परियाज ना भाग–III का काय भा.वा.अ.शि.प. को दिया गया जिसमें भा.वा.अ.शि.प. द्वारा भा. व.सं. देहरादून, भा.व.स., देहरादून, आई आई एम–अहमदाबाद, कोलोराडो राज्य विश्वविद्यालय (यू एस) तथा स्वीडीश कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय स्वीडन जस सस्थाना क साथ सांस्कृतिक प्रबंध एवं भागीदारी मुहैया कराई गई।

भा.वा.अ.शि.प. को मुख्य प्रशिक्षणदायी संस्था के रूप में 31 जनवरी 2011 से 4 मार्च 2011 तक, इस तरह का दूसरा आयोजन कराने का श्रेय प्राप्त हुआ।

नीति संबंधी अनुसन्धान

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा 29 सितम्बर 2011 और 25 नवम्बर 2011 को भा.वा.अ.शि.प. में मूल्यांकन समिति की दो तथा वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 30 मार्च 2011 को चौथी नीति अनुसन्धान समिति की बैठकों का आयोजन कराया गया।

भा.वा.अ.शि.प. ने राष्ट्रीय वन अधिकार समिति की बठक की मजबानी की, जिसका गठन एम आ इ एफ तथा एम ओ टी ए द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। सत्रह राज्यों में व्यापक परामर्श और विचार–विमर्श करने के उपरांत समिति ने अपनी रिपोर्ट "मंथन" को माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार के समक्ष जनवरी 2011 में प्रस्तुत किया (बैठकों के विवरण संलग्न हैं)।

एच आर डी

एच आर डी की शुरूआतों के रूप में भा.वा.अ.शि.प. ने वैज्ञानिकों और वन अधिकारियों के लिए 1 अप्रैल 2010 से 31 मार्च 2011 तक निम्नलिखित विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया:

क्र. सं.	प्रशिक्षण	तिथि	संस्थान	भागीदारों की संख्या
1.	एस सी/एस टी/ओ बी सी का रोस्टर बनान का प्रशिक्षण	30 और 31 अगस्त 2010	एस सी/एस टी आयोग, लखनऊ भा.वा.अ.शि.प., देहरादून म	21
2.	जलवाय परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण (सी सी सी एम)	6 स 10 सितम्बर 2010	ज.ज.प., प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	5
3.	प्रयोगशाला प्रबंधन पर स्टॉफ का प्रशिक्षण आर ए–प्रथम, आर ए–द्वितीय और टी ए–प्रथम	13 स 17 सितम्बर 2010	वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून	25
4.	महिला वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविज्ञ क लिए जलवाय परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण (सी सी सी एम) पर प्रशिक्षण	6 स 10 सितम्बर 2010	ज.ज.प. प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	7
5.	प्रयोगशाला प्रबंधन पर स्टॉफ का प्रशिक्षण आर ए–प्रथम, आर ए–द्वितीय और टी ए–प्रथम	6 स 10 दिसम्बर 2010	उ.व.अ.स., जबलपुर	25
6.	'काष्ठ गुण अभिलक्षणों' पर प्रशिक्षण	3 स 7 जनवरी 2011	का.वि.प्रौ.स., बंगलौर	5
7.	'नैनोप्रौद्योगिकी' पर प्रशिक्षण	18 स 20 जनवरी 2011	का.वि.प्रौ.स., बंगलौर	7
8.	'जलवाय परिवर्तन और वनों' पर प्रशिक्षण	31 जनवरी स 4 फरवरी 2011	ज.ज.प. प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	20
9.	'सुदूर संवेदन और जी आइ एस अनुप्रयोग' पर प्रशिक्षण	31 जनवरी स 11 फरवरी 2011	भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, देहरादून	7
10.	भा.वा.अ.शि.प. क वैज्ञानिकों तथा अनुसन्धान अधिकारियों कलिए अधिष्ठापन प्रशिक्षण	21 माच स 27 माच 2011	वन अनुसन्धान संस्थान सम विश्वविद्यालय, देहरादून	–
11.	भा.व.स. अधिकारियों क लिए मध्य सेवाकालीन प्रशिक्षण	31 जनवरी स 4 फरवरी 2011	शिक्षा निदेशालय, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा इ.गा.रा.व.अ., देहरादून म	60
			कुल	**207**

सहायता अनुदान

देश में वानिकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विभिन्न वानिकी अनुसन्धान विश्वविद्यालयों/संस्थानों को सहायता अनुदान दिया जाता है जो अंडरग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स करवाते हैं। अप्रैल 2010 से मार्च 2011 के 10 विश्वविद्यालयों को सहायता अनुदान के रूप में ` 204.088 लाख की रकम अवमुक्त की गई है। चौदह विश्वविद्यालयों द्वारा उपयोग न की गई राशि का पुनः प्रमाणन किया गया है और चार विश्वविद्यालयों को अनुदान को एक लेखा शीर्ष से दूसरे लेखा शीर्ष में परिवर्तित करने की स्वीकृति दी गई है।

भा.वा.अ.शि.प. प्रमाणन बोर्ड

शिक्षा निदेशालय ने "एक्रीडिएशन ऑफ कोर्स कार्यक्रम" के अंतर्गत वानिकी प्रशिक्षण चलाने वाले विश्वविद्यालयों के कार्य का मूल्यांकन अपने हाथ में लिया है, जो इस प्रकार गठित है:

क्र. सं.	कॉलेज/विश्वविद्यालय का नाम	टीम	दौरे की तिथि
1.	सी सी एस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)	1. श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.वा.अ.शि.प. एव अध्यक्ष 2. डॉ. टी.सी. पोखरीयाल, पूर्व वैज्ञानिक–एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून	8 स 11 फरवरी 2011
2.	उड़ीसा कृषि एव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)	1. श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.वा.अ.शि.प. एव अध्यक्ष 2. डॉ. ज.क. रावत, भा.व.स. (सवानिवृत) पूर्व निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून	19 स 21 मइ 2010
3.	कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)	1. श्री आर. क. डोगरा, सहायक महानिदेशक (शिक्षा), सदस्य सचिव, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून 2. डॉ. ए.एन. शुक्ला, पूर्व एच आ डी, वन रोग विज्ञान, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून,	23 और 24 अप्रैल 2010
4.	केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बागवानी एव वानिकी कॉलेज, पासीघाट (अरूणाचल प्रदेश)	1. श्री आर. क. डोगरा, सहायक महानिदेशक (शिक्षा), सदस्य सचिव, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून 2. श्री आर. पी. एस. कटवाल, पूर्व महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	27 अक्टूबर 2010 स आग
5.	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब)	1. श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.वा.अ.शि.प. एव अध्यक्ष 2. डॉ. ज.डी.एस. नेगी, पूर्व वैज्ञानिक–एफ वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून	21 स 24 सितम्बर 2010
6.	वानिकी कॉलेज, डॉ. बी एस एस कोंकण कृषि विद्यापीठ, डापोली (एस एस)	1. श्री आर. क. डोगरा, सहायक महानिदेशक (शिक्षा), सदस्य सचिव भा.वा.अ.शि.प., देहरादून 2. श्री आर. पी. एस. कटवाल, पूर्व महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून,	24 स 26 अगस्त 2010
7.	बागवानी एव कृषि कॉलेज, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी (गुजरात)	1. श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.वा.अ.शि.प. एव अध्यक्ष 2. डॉ. एस.डी. भारद्वाज, पूर्व डीन, डॉ. वाई.एस.पी., य.एच.एफ. सोलन (एच पी)	9 नवम्बर 2010 स आग

नीति अनुसन्धान अध्ययनः

''सुधारित आजीविका सहायता तथा सतत् वन प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए, अनुसूचित जनजातियों और परंपरागत रूप से वनों में रहने वाले अन्य लोगों के लिए (वन अधिकारों से मान्यता प्राप्त) अधिनियम 2006 के अनुसार कार्यान्वयन हेतु विभिन्न संस्थानों के बीच आपसी तालमेल'' विषय पर प्रारंभिक अध्ययन, डेस्क समीक्षा और कार्य समीक्षा अध्ययनों से प्राप्त परिणामों का पहला प्रस्तुतीकरण। यह प्रस्तुतीकरण, इन्वाइरो लीगल डिफेन्स फर्म, नोएडा द्वारा भा.वा.अ.शि.प. की मूल्यांकन समिति के समक्ष किया गया जिसके अध्यक्ष उप महानिदेशक (शिक्षा) थे। इसका आयोजन 29 सितम्बर 2010 को भा.वा.अ.शि.प. के समिति कक्ष में किया गया।

प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए, अनुसूचित जनजातियों और परंपरागत रूप से वनों में रहने वाले अन्य लोगों के लिए (वन अधिकारों से मान्यता प्राप्त) अधिनियम 2006 के अनुसार कार्यान्वयन हेतु विभिन्न संस्थानों के बीच आपसी तालमेल'' विषय पर प्रारंभिक अध्ययन, डेस्क समीक्षा और कार्यसमीक्षा अध्ययनों से प्राप्त परिणामों का दूसरा प्रस्तुतीकरण। यह प्रस्तुतीकरण, इन्वाइरो लीगल डिफेन्स फर्म, नोएडा द्वारा भा.वा.अ.शि.प. की मल्याक न अध्यक्ष उप महानिदशक (शिक्षा) थ। इसका आयोजन 25 नवम्बर 2010 को भा.वा..अ.शि.प. के समिति कक्ष में किया गया।

अतिरिक्त महानिदेशक (एफ सी), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली की अध्यक्षता में 30 मार्च 2011 को वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में चौथी नीति अनुसन्धान समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

डॉ. एन.सी. सक्सेना, सेवा निवृत्त सचिव, योजना आयोग की अध्यक्षता में 3 मई 2010 को पर्यावरण भवन, नई दिल्ली के सम्मेलन कक्ष न. 403 में राष्ट्रीय एफ आर ए समिति की पहली बैठक का आयोजन किया गया।

वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 7 जून 2010 को दूसरी राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त समिति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एवं जनजाति संबंधी मामलों के मंत्रालय) की बैठक का आयोजन किया गया।

वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 9 अगस्त 2010 को तीसरी राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त समिति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एवं जनजाति संबंधी मामलों के मंत्रालय) की बैठक का आयोजन किया गया।

वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 सितम्बर 2010 को चौथी राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त समिति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एवं जनजाति संबंधी मामलों के मंत्रालय) की बैठक का आयोजन किया गया।

वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 13 अक्टूबर 2010 को पांचवीं राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त संबंधी मामलों के मंत्रालय) की बैठक का आयोजन किया गया।

वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 16 नवम्बर 2010 को छठी राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त समिति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एवं जनजाति संबंधी मामलों के मंत्रालय) की बैठक का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त समिति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एवं जनजाति संबंधी मामलों के मंत्रालय) की रिपोर्ट का मसौदा तैयार करने हेतु उप वर्ग की बैठक का आयोजन
3 दिसम्बर 2010 को वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में किया गया।

रिपोर्ट पर विचार–विमर्श करने और उसे अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय एफ आर ए समिति (संयुक्त समिति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एवं जनजाति संबंधी मामलों के मंत्रालय) की बैठक का आयोजन
12 से 15 दिसम्बर 2010 तक किया गया।

3.1 वन अनुसन्धान संस्थान सम–विश्वविद्यालय

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा अधिसूचना संख्या एफ.9.25/89 यू–3 दिनांक 6 दिसम्बर 1991 के तहत व.अ.सं., देहरादून को विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। सम–विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने के पश्चात संस्थान के शैक्षिक क्रियाकलापों में भारी वृद्धि हुई है और अब वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षण, पर्यावरण एवं अन्य संबद्ध विद्या क्षेत्रों को अधिक सफल और कारगर ढंग से सम्पन्न किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा पी एच डी कार्यक्रमों के अंतर्गत विशिष्ट क्षेत्रों में अनुसन्धान पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाई जा रही है।

शैक्षिक कोर्स एवं दाखिला

वन अनुसन्धान संस्थान सम विश्वविद्यालय द्वारा नियमित रूप से निम्नलिखित शैक्षिक कोर्स चलाए जा रहे हैं: वानिकी में दो वर्ष का एम एस सी कोर्स, पर्यावरण प्रबंधन तथा काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा

1. वाडिया इन्सटीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी, स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

एम एस सी पाठ्यक्रमों में अखिल भारतीय प्रतियोगिता प्रवेश परीक्षा के आधार पर दाखिला होता है। वर्ष 2010–2011 में शैक्षिक सत्र 2010–2012 के लिए उपरोक्त छः कोर्स में 165 विद्यार्थियों को दाखिला दिया गया। कोर्स के अनुसार संख्या इस प्रकार है:

1. एम एस सी काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी – 35
2. एम एस सी पर्यावरण प्रबंधन – 35
3. एम एस सी वानिकी – 35
4. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में पी एम डी – 20
5. लुग्दी एवं कागज प्रौद्योगिकी में पी जी डी – 20
6. आरोमा प्रौद्योगिकी में पी एम डी – 20

कोर्स योजनाः सभी कोर्स की कोर्सों योजनाएं, पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई। कक्षाएं लेने के लिए आंतरिक एवं बाह्य संकायों को आमंत्रित किया गया। प्रथम और तृतीय सत्र के विद्यार्थियों के लिए जुलाई से दिसम्बर 2010 तक और द्वितीय तथा चतुर्थ सत्र के विद्यार्थियों के लिए जनवरी 11 से मई 11 तक प्रेक्टीकल कक्षाओं की व्यवस्था की गई।

विशेष व्याख्यानः निम्नलिखित सभी कोर्सों के लिए विशेष व्याख्यानों की व्यवस्था की गई।

डब्ल्यू एस टी कोर्स के विद्यार्थियों के लिए ''डब्ल्यू एस टी चुनौतियां और सुअवसर'' पर डॉ. एस.सी. जाशी, भा.व.स., निदशक, आई.डब्ल्यू. एस.टी., बंगलौर ने 12 मई 2010 को व्याख्यान दिया।

'यू एस ए में वनों क प्रबंधन' पर प्रो. रेनी जेरमेन, 7 जून 2010। इसमें व.अ.सं. सम विश्वविद्यालय के साथ व.अ.सं. के अनुसन्धान अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

'स्वच्छ विकास प्रबंधन' पर श्री विजय आनंद ने 19 अगस्त 2010 को व्याख्यान दिया।

'व्यक्तित्व विकास' पर डॉ. के.एल. आर्यन, निदेशक, संचार एवं प्रबंधन ने एम एस सी वानिकी और एम एस सी पर्यावरण प्रबंधन के विद्यार्थियों के समक्ष व्याख्यान दिया।

19 से 22 मार्च 2011 तक इन्डोर तथा 23 से वन नीति, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा व.अ.स. समविश्वविद्यालय क समस्त विद्यार्थिया के समक्ष 22 अक्टूबर 2010 व्याख्यान दिया गया।

''भारत में बाघ संरक्षण कार्यक्रम'' पर डॉ. गार्डोन एम हिक्के द्वारा 13 अक्टूबर 2010 को व्याख्यान दिया गया।

वन्यजीव सप्ताह 2010 के अवसर पर 4 अक्टूबर 2010 को डॉ. एस. चंदोला, भा.व.से., पी सी सी एफ तथा वन्यजीव संरक्षक द्वारा विशेष वार्ता की गई।

''व्यक्तित्व विकास'' पर डॉ. के.एल. आर्यन, निदेशक, आई सी एम ने सभी एम एस सी विद्यार्थियों के समक्ष जनवरी–फरवरी 2011 को व्याख्यान दिए।

''मानव–वन्यजीव टकराव, सरीसृप विज्ञान, पक्षीविज्ञान तथा लिपिडोप्ट्रोन (शलभ), कीटविज्ञान'' पर श्री संजय सोंधी, टीट्ल ट्रस्ट संगठन, देहरादून ने सभी विद्यार्थियों के समक्ष 12 फरवरी 2011 को व्याख्यान दिया।

''प्राथमिक चिकित्सा और औद्योगिक आपदाओं'' पर डॉ. अतुल आलोक, सी एम ओ, न्यू फॉरेस्ट, हॉस्पीटल, व.अ.सं., देहरादून ने एम एस सी, डब्ल्यू एस टी के विद्यार्थियों के समक्ष 1 मार्च से 4 मार्च 2011तक व्याख्यान दिए।

''भारत में आर्किड संरक्षण'' पर डॉ. के.एस. शशीधर, भा.व.से., मुख्य वन्यजीव संरक्षक, नागालैण्ड ने एम एस सी वानिकी के विद्यार्थियों के समक्ष 1 मार्च 2011 को व्याख्यान दिया ।

''व्यावसायिक अध्ययन'' पर डॉ. अर्नेष्ट क्रुस्टान, जर्मनी में व्यावसायिक अध्ययन के प्रभारी अधिकारी द्वारा 11 मार्च 2011 को व्याख्यान दिया गया।

''नियर इन्फ्रारड स्पक्टास्थापी'' पर डॉ. लॉरेन्स आर. स्किमलेक, सह–प्राध्यापक, जार्जिया विश्वविद्यालय द्वारा 8 मार्च 2011 को व्याख्यान दिया गया।

अध्ययन दौरे और शैक्षिक भ्रमण

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए 1 अप्रैल 2010 से 31 मार्च 2011 के बीच निम्नलिखित स्थलों में एक दिवसीय अध्ययन दौरों/शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन किया गया।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और आरोमा प्रौद्योगिकी में 18 और 19 अगस्त 2010

2. जलागम कार्य, सहस्त्रधारा, 26 जुलाई 2010।
3. जोधपुर, अहमदाबाद, मैसूर, बंगलौर 22 अगस्त से 10 सितम्बर 2010।
4. फूलों की घाटी 6 से 9 सितम्बर 2010 तथा 29 अगस्त से 3 सितम्बर।
5. पेपर एण्ड प्लाईवुड उद्योग, यमुनानगर, 20 अगस्त 2010।
6. दिल्ली, 29 और 30 सितम्बर 2010।
7. सोंग घाटी (रायपुर–कुमाल्डा) 9 अक्टूबर 2010।
8. धनोल्टी, 14 अक्टूबर 2010।
9. शहंशाही आश्रम, देहरादून 14 अक्टूबर 2010।
10. राजाजी राष्ट्रीय पाक, दहरादन 17 नवम्बर 2010।
11. उत्तरी उत्तर प्रदेश, नवम्बर के तीसरे सप्ताह में
12. टिहरी बांध, नवम्बर 2010।
13. यमुनानगर और सहारनपुर 11 से 13 फरवरी 2011।
14. राजाजी राष्ट्रीय पाक, दहरादन, 11 फरवरी 2011।
15. फरीदाबाद, जयपुर और जोधपुर, 12 से 19 मार्च 2011।
16. ऋषिकेश, 4 मार्च 2011।
17. बड्डी, हिमाचल प्रदेश, 9 से 12 मार्च 2011।

विदेश के दौरे

सुश्री अनीशा बिस्वार्या, विद्यार्थी, एम एस सी, ई एम, चतुर्थ सत्र (2009–11) द्वारा शोध प्रबंधन कार्य हेतु फरवरी से मई 2011 तक कनाडा का दौरा किया गया।

आवधिक प्रलेख

1. एम एस सी विद्यार्थियों ने आवधिक प्रलेख पूर्ण किए जिन्हें जून 2010 में प्रस्तुत किया।
2. पोस्ट मास्टर डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थियों ने दिसम्बर 2010 में आवधिक प्रलेख पूर्ण किए और उन्हें प्रस्तुत किया।

खेलकूद स्पर्द्धा

विश्वविद्यालय द्वारा 17 से 27 मार्च तक खेलकूद स्पर्द्धा का आयोजन किया गया।

''वना की परिभाषा'' पर डां. क.एस. सठी, डी आइ जी, 27 मार्च 2011 तक आउटडोर खेलों का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के क्रिकेट ग्राउन्ड में 17 से 21 मार्च 2011 तक क्रिकेट मैचों का आयोजन किया गया।

खेलकूद स्पर्द्धाओं का समापन समारोह 27 मार्च 2011 को आयोजित किया गया।

सेमीनार

एम एस सी पर्यावरण प्रबंधन के विद्यार्थियों ने ''भू–दृश्य पुनर्स्थापन प्रक्रिया–चुनौतियां और सुअवसर'' विषय पर व.अ.स., देहरादून में राष्ट्रीय सेमीनार में 22 और 23 फरवरी 2011 को भाग लिया।

एम एस सी डब्ल्यू एस टी के विद्यार्थियों ने ''काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी अनुसन्धान की प्रगतिः वर्तमान प्रवृत्तियां, भविष्य की चुनौतियां और सुअवसर'' विषय पर व.अ.स., देहरादून में राष्ट्रीय सेमीनार में 9 और 10 मार्च 2011 भाग लिया।

औद्योगिक संलग्नता/सांस्थानिक संलग्नता/कारखानों का दौरा

एम एस सी डब्ल्यू एस टी तृतीय सत्र के विद्यार्थियों के लिए औद्योगिक संलग्नता की व्यवस्था दिसम्बर 2010 में की गई।

एम एस सी वानिकी और एम एस सी पर्यावरण प्रबंधन, तृतीय सत्र के विद्यार्थियों के लिए सांस्थानिक संलग्नता की व्यवस्था दिसम्बर 2010 में की गई।

पी जी डी (लुग्दी तथा कागज प्रौद्योगिकी) के लिए पेपर मिल का दौरा दिसम्बर 2010 में आयोजित किया गया।

अरोमा प्रौद्योगिकी कोर्स, पोस्ट मास्टर डिप्लोमा, द्वितीय सत्र के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण तथा परियोजना कार्य का आयोजन जनवरी से जून 2011 के बीच किया गया।

शोध प्रबंध/परियोजना कार्य

एम एस सी, पी एम डी तथा पी जी डी कोर्स के अंतिम सत्र के सभी विद्यार्थियों के लिए

परियोजना कार्य आयोजित किया गया।

सभी कोर्स के लिए परियोजना कार्य सेमीनार का आयोजन जून 2010 में किया गया।

अधिष्ठापन प्रशिक्षण

वन अनुसन्धान संस्थान सम विश्वविद्यालय द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के अनुसन्धान अधिकारियों और वैज्ञानिकों के लिए 21 मार्च से 27 मई 2011 तक दस सप्ताह का अधिष्ठापन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान वानिकी, आनुवंशिकी, सुदूर संवेदन, वन नीति तथा कानून, वन सर्वेक्षण, वन्यजीव, जैवविविधता और मृदा विज्ञान से संबंधित कई महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान दिए गए। विभिन्न संस्थानों, जैसे भारतीय वन सर्वेक्षण, भारतीय वन्यजीव संस्थान, भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, सी ए एस एफ ओ एस तथा केंद्रीय मृदा
एवं जल संरक्षण प्रशिक्षण और अनुसन्धान संस्थान से विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित कर विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए।

दौरे

अधिष्ठापन प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों को व.अ.स. के विभिन्न प्रभागों का दौरा कराया गया यथा : काष्ठीय वन उत्पाद प्रभाग, आनुवंशिक तथा वृक्ष संचरण प्रभाग, वनस्पति प्रभाग, वन कीट विज्ञान प्रभाग, वन मृदा एवं भूमि पुनर्स्थापन प्रभाग, आर एस एम प्रभाग, वन संवर्धन प्रभाग, रासायनिक पभाग, वन राग विज्ञान पभाग, वन पारिस्थितिकी एवपर्यावरण प्रभाग, जैव सूचना केंद्र एवं जी आई एस प्रकोष्ठ तथा सेल्यूलोज तथा पेपर प्रभाग, आदि।

आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर, आई डब्ल्यू एस टी, आइ पी आइ आर आइ टी आइ तथा आइ आइ एस सी, बंगलौर का दौरा करने के लिए लम्बा शैक्षिक दौरा आयोजित किया गया।

अधिष्ठापन प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों ने फील्ड रिसर्च स्टेशन (भा.कृ.अ.प.) का दौरा किया जिसमें डॉ. मधु, एग्रोनॉमिस्ट आई सी ए आर तथा प्रशिक्षणार्थियों के साथ थे।

अन्य क्रियाकलाप

डीन (अकादमिक) द्वारा कोर्स सत्र संयोजकों के साथ व.अ.सं. विश्वविद्यालय के नव प्रविष्ट विद्यार्थियों के लिए जुलाई 2010 तथा अरोमा प्रौद्योगिकी एवं लुग्दी कागज प्रौद्योगिकी के विद्यार्थियों के लिए अगस्त 2010 में परिचयात्मक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें नवआगंतुकों का स्वागत किया गया और साथ ही उन्हें विश्वविद्यालय और हॉस्टल के नियम विनियमों से अवगत कराया गया।

शिक्षणोत्तर क्रियाकलाप

व.अ.स. सम–विश्वविद्यालय द्वारा 2 स 8 अक्टूबर 2010 तक वन्यजीव सप्ताह मनाया गया।

विश्वविद्यालय के ''वन्यजीव क्लब'' के विद्यार्थियों ने घायल जानवरों के उपचार हेतु सहस्त्रधारा, देहरादून में स्वैच्छिक शिविर में भाग लिया।

व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय द्वारा 21 मार्च 2011 को ''विश्व वानिकी दिवस'' मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए क्विज और पोस्टर प्रस्तुति का आयोजन किया गया।

पी एच डी तथा अनुसन्धान स्कालर्स के लिए अनिवार्य कोर्स

पी एच डी तथा अनुसन्धान स्कालर्स के लिए वानिकी, सांख्यिकी तथा कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर 15 सितम्बर से 31 दिसम्बर 2010 तक अनिवार्य कोर्स का आयोजन किया गया।

स्थापन

सभी एम एस सी तथा डिप्लोमा कोर्स के लिए स्थापन ब्रोशर तैयार किए गए।

विद्यार्थियों के प्रोफाईल के साथ स्थापना ब्रोशर को विभिन्न संगठनों/उद्योगों/कम्पनियों/एन जी ओ के पास भेजा गया और फोन/फैक्स/ई–मेल के जरिए उनसे सम्पर्क किया गया तथा कैम्पस में साक्षात्कार किया गया।

विभिन्न संगठनों/उद्योगों/कम्पनियों/एन जी ओ के साथ कैम्पस साक्षात्कार किया गया जिन्हें अकादमिक वर्ष 2010–2011 में पूर्ण किया गया।

स्थापना 2011 मार्च 2010 के बीच शोध प्रबंध तथा श्री एम. सी. पाण्डे (से.नि. उ.व.सं.) उत्तर प्रदेश भी

क्र. सं.	संस्थान	चयनित विद्यार्थी	कोर्स
1.	मैसस सुदीमा इंटरनेशनल, सिंगापुर	ए. रघुपति अमेय काल अमोल रंगारारी मुकेश रावत	एम एस सी डब्ल्य एस टी
2.	मैसस सी एच इ पी इंटरनेशनल, मुम्बइ	विनोथ वी.	एम एस सी डब्ल्य एस टी
3.	मैसस सेन्चुरी प्लाईवुड, कोलकत्ता	अरनव चटोपाध्याय अरूण कुमार विद्या सागर सुरभि सरवन	एम एस सी डब्ल्य एस टी
4.	मैसस शारदा प्लाईवुड, कोलकत्ता	काजी शहाबुद्दीन प्रेम कुमार एक नाम की प्रतीक्षा ह	एम एस सी डब्ल्य एस टी
5.	मैसस सी एल गुप्ता, मुरादाबाद	बिजेंद नारायण त्यागी	एम एस सी डब्ल्य एस टी
6.	मैसस अगवाल टिम्बर्स, गांधी धाम	नितीश नंदना कुमार	एम एस सी डब्ल्य एस टी
7.	मैसस पहाड़पुर लिमिटेड, कोलकत्ता	परिणाम की प्रतीक्षा ह	—
8.	ए सी एफ, सिक्किम	आरती बस्नेत	एम एस सी वानिकी
9.	मैसस ए बी सी पेपर मिल लिमिटेड, होशियारपुर	परिणाम की प्रतीक्षा ह	एम एस सी डब्ल्य एस टी
10.	डिप्टी. कमांडेंट सी आर पी एफ	अनीशा सिद्धिक	एम एस सी वानिकी

अधिष्ठापन प्रशिक्षण होशियारपुर के अन्तर्गत अधिकारियों और वैज्ञानिकों का कार्यक्षेत्रीय भ्रमण

अधिष्ठापन प्रशिक्षण के अन्तर्गत माडर्न नर्सरी यूनिट में अधिकारियों और वैज्ञानिकों का दौरा

शिमला में प्रदर्शन के लिए व.अ.सं. विश्वविद्यालय द्वारा अधिकारियों और वैज्ञानिकों के लिए आयोजित कार्यक्षेत्रीय दौरा

व.अ.सं. के विद्यार्थियों का फूलों की घाटी का दौरा

3.2 आयोजित प्रशिक्षण

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

व.अ.सं. विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए 4 अक्टूबर से 9 दिसम्बर 2010 तक द्वितीय सुदूर संवेदन पर डिस्टेन्स लर्निंग कार्यक्रम, भौगोलिक सूचना पद्धति तथा ग्लोबल पोजीशनिंग पद्धति का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सत्ताईस विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें चार माड्यल्स थे यथाः सुदूर संवेदन तथा डिजीटल इमेज प्रोसेसिंग, ग्लोबल पोजीशनिंग पद्धति, भौगोलिक सूचना पद्धति तथा आर एस और जी आई एस अनुप्रयोग।

संस्थान के वैज्ञानिकों और अधिकारियों के लिए सुदूर संवेदन और जी आई एस प्रशिक्षण।

संस्थान के कर्मचारियों के लिए कम्प्यूटर अनुप्रयोग।

प्रादेशिक सेना के इकोटास्क फोर्स कर्मियों के लिए 20 से 23 अप्रैल 2010 तक वनीकरण तकनीकों का प्रशिक्षण

वृक्ष बीज प्रौद्योगिकी पर 17 से 21 मई 2010 तक प्रशिक्षण।

राजस्थान म आइ जी डब्ल्य डी पी– एन ए बी ए आर डी कर्मियों के लिए 6 से 10 सितम्बर 2010 तक बीज और पौधशाला प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण ।

एस एस बी कर्मियों के लिए 27 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2010 तक पौधशाला और रोपण प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण।

प्रादेशिक सेना के इकोटास्क फोर्स कर्मियों के लिए 26 से 29 अक्टूबर 2010 तक वनीकरण तकनीकों का प्रशिक्षण

''वन अग्नि प्रबंधन'' पर आयोजित प्रशिक्षण जिसे 6 दिसम्बर से 10 दिसम्बर 2010 तक विभिन्न राज्यों के अधिकारियों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया।

शीशम की मर्त्यता पर नेटवर्क विकसित करने के लिए 21 सितम्बर 2011 को एक दिवसीय अंतः सक्रिय बैठक, जिसमें एच ए यू, हिसार, डॉ. वाई एस परमार विश्वविद्यालय, बागवानी, नौनी, सोलन, जी बी पंत विश्वविद्यालय, पंतनगर, भा.वा.अ.शि.प. संस्थान (जोधपुर, जोरहाट, जबलपुर, और रांची, इलाहाबाद), हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश के वन विभाग के अधिकारियों और व. अ.सं. के संबद्ध प्रभागों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

स्थानीय मशरूम उपजाने वाले किसानों (21 न.) के लिए 11 मार्च 2011 को *गैनोडर्मा लूसीडम* की खेती पर एक दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम।

हरियाणा वन विभाग के अधिकारियों के लिए 3 से 7 मई 2010 तक ''बांस संसाधन एवं विस्तार'' पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण।

वन अनुसन्धान संस्थान में पंजाब वन विभाग के लिए 10 से 14 मई 2010 तक 'बांस संसाधन एवं विस्तार' पांच दिवसीय प्रशिक्षण।

एन डी एम सी, नई दिल्ली के लिए निम्न लागत की क्लोनल विस्तार प्रौद्योगिकी पर अल्पावधि प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

10 से 14 मई 2010 तक ''वनस्पति संग्रहालय तथा वृक्ष प्रबंधन'' पर अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम।

16 से 20 अगस्त 2010 तक ''हरित पट्टिका विकास'' पर अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम।

27 सितम्बर से 8 अक्टूबर 2010 तक ''पादप वर्गीकरण क्षमता वृद्धि'' पर डी एस टी द्वारा निधिकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम।

''महत्वपूर्ण वन वृक्षों, बांस तथा औषधीय पादपों की ऊतक संवृद्धि'' पर 13 से 17 दिसम्बर 2010 तक आयोजित प्रशिक्षण।

लैन्टाना कमारा से हाथ से कागज बनाने पर 7 से 11 जून 2010 तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जिसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया।

सात से 11 दिसम्बर 2010 तक ''औषधीय पादपों की उपयोगिता वृद्धि, खेती और विपणन'' पर एन डब्ल्यू एफ पर प्रभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण।

एन डब्ल्यू एफ पी प्रभाग द्वारा किसानों के लिए *थाइमस सर्फाइलम* की खेती, उपयोगिता वृद्धि तथा उपयोजन पर 22 मार्च 2010 को प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

थाइमस सर्फाइलम की खेती पर प्रशिक्षण

''सुरभित तेल, परफ्यूमरी तथा अरोमाथ्रेपी'' पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण/कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसे केमिस्ट्री प्रभाग, व.अ.सं. द्वारा एफ एफ डी सी, कन्नौज के सहयोग से संयुक्त रूप से 31 मई से 4 जून 2010 तक व.अ.सं. में आयोजित किया गया।

हाथ से कागज बनाने और उसे विभिन्न उत्पादों में बदलने हेतु एन जी ओ के लिए त्वरित प्रशिक्षण।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय जैवविविधता, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार और राज्य जैवविविधता बोर्ड की बैठक के दौरान माननीय यूनियन मिनिस्टर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के समक्ष प्राकृतिक रंगसाजी और कम्पोस्ट की प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन 6 सितम्बर 2010 को चन्डीगढ़ में किया गया।

ई टी वी के समक्ष प्राकृतिक रंगसाजी और जड़ीय गुलाल प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन, जिसे 22 सितम्बर 2010 को प्रसारित किया गया।

''समृद्धि के अनुप्रयोग और लाभ – रेशम उत्पादकता वृद्धि'' पर प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का रेशम कीट किसानों के लिए भडवाला तथा भड गाव, विकासनगर में 27 मार्च 2007 को आयोजन किया गया।

प्रभाग द्वारा 25 से 29 अक्टूबर 2010 तक ''काष्ठ सिझाई'' पर पांच दिवसीय अल्प अवधि का प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया गया जिसमें नेवल डकयार्ड, मुम्बई और नेवल शिप रिपेयरिंग केंद्र, कोच्चि से 12 भागीदारों ने भाग लिया। वन उत्पाद प्रभाग के संकायों द्वारा सिझाई के अलावा संबंधित विषयों से प्रशिक्षणार्थियों को काष्ठ परिरक्ष्य मकेनिक्स, फिनिशिंग तथा कम्पोसिट्स से परिचित कराया गया।

प्रकाष्ठ मकेनिक्स विद्याक्षेत्र, वन उत्पाद प्रभाग, व.अ.सं. द्वारा 6 से 10 दिसम्बर 2010 तक ''प्रकाष्ठ वर्गीकरण तथा श्रेणीकरण'' पर पांच दिवसीय अल्पावधि प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण के नेवल डकयार्ड, मुम्बई, नेवल शिप रिपेयर यार्ड, नेवल बेस, कोच्चि, हिमाचल प्रदेश राज्य वन निगम लिमिटेड, शिमला, गार्डन रीच

शिपबिल्डस और इंजीनियर्स लिमिटेड, कोलकत्ता से 23 कर्मियों ने भाग लिया।

''परती भूमियों के पारिपुनर्स्थापन'' पर प्रशिक्षण।

जैव उपचार तथा पर्यावरणीय सुधार पर प्रशिक्षण।

''बायोड्रेनेज'' द्वारा जल–पल्वित स्थलों के पुनराप चार पर किसाना क साथ चयनित जलप्लावित स्थलों के संबंध में तकनीकी बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन (16 मार्च 2011) किया गया।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

''पी सी आर आधारित जीन–पृथक्करण तकनीकों'' पर 29 और 30 जुलाई 2010 को प्रशिक्षण।

5 से 9 जुलाई तक ''वन आनुवंशीय संसाधनों के प्रबंधन और संरक्षण'' पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला। इस प्रशिक्षण कार्यशाला को भा.वा.अ.शि.प., वन अनसन्धान संस्थान, मलेशिया (एफ आर आई एम), ए पी ए एफ आर आई, व.अ.सं., जैवविविधता अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाष्ठ व्यापार सगठन द्वारा पायाजित किया गया। इस कार्यशाला में सात देशों के 21 अनुसन्धानकर्ताओं/अधिकारियों ने भाग लिया। भागीदारों का विवरण इस प्रकार हैः भारत–6, कम्बाडिया–3, इडानशिया–3, मलशिया–3, म्यांमार–2, फिलीपीन्स–1, थाईलैण्ड–3।

औस एड (AusAID)–निधिकृत परियोजना के तहत 12 और 13 अगस्त 2010 को आई एफ जी टी बी में वन विभाग, काष्ठ आधारित उद्योगों और किसानों के लिए आनुवशीय रूप स सधारित बीजा आर बालवक्षा पर दा दिवसीय पि शक्षण कायशाला। सी एस आइ आर आ,आस्ट्रेलिया से मि. के. पिनोपुसारेक ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

तमिलनाडु वन विभाग के कर्मियों के लिए ''कृन्तक वानिकी'' पर 21 दिसम्बर 2010 को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम। इस प्रशिक्षण में करीब 37 कर्मियों ने भाग लिया।

''जैवविविधता का महत्व, उसका संरक्षण और सतत् उपयोग'' पर तमिलनाडु में सरकारी स्कूलों और सरकार द्वारा सहायता प्राप्त स्कूलों के विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन निम्नलिखित तिथियों में किया गया, जिसके लिए पर्यावरण, निदेशालय, चेन्नई द्वारा उपलब्ध कराई गई रकम का उपयोग किया गयाः

4 और 5 अगस्त 2010 – 36 भागीदार
11 और 12 अगस्त 2010 – 40 भागीदार
18 और 19 अगस्त 2010 – 33 भागीदार
25 और 26 अगस्त 2010 – 29 भागीदार

पंचायत यूनियन एलीमेन्टरी स्कूल, कान्डीयूर के विद्यार्थियों के लिए 30 मार्च 2011 को पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

भारतीय वन सवा अधिकारिया क लिए ''वन ससाधन पबध ान'' पर 18 आर 19 अक्टब र 2010 का दा दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर के वैज्ञानिकों के लिए 11 और 12 जनवरी 2011 तक ''परिचयात्मक आर्क जी आई एस प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का आयोजन।

जंतु विज्ञान विभाग, सरकारी आर्ट कॉलेज, कोयम्बटूर के संकायों तथा विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय ओरिएन्टेशन कार्यक्रम 6 अगस्त 2010 को आयोजित किया गया।

यांत्रिक पद्धतियों और रासायनिक विश्लेषण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

सत्ताइस और 28 सितम्बर 2010 का व.आ.वृ.प.स. में 'यांत्रिक पद्धतियां और रासायनिक विश्लेषण' पर त्वरित गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम। इसमें विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालय के 21 अनुसन्धान विद्यार्थियों ने भाग लिया और लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण के अंग के रूप में डॉ. अन्नादुरैई, सी ई ओ, प्रेसीएन्ट जैवविज्ञान, बंगलौर ने ''जैवविज्ञानों में नवीन सुअवसर'' पर विशेष व्याख्यान दिया, जिसमें जे आर एफ, आई एफ जी टी बी के वैज्ञानिक, प्रशिक्षण भागीदार के रूप में उपस्थित थे।

''इक्टोमाइकोरिजल फंजी– पृथक्करण, पहचान, शुद्ध संवृद्धि तथा वृहत उत्पादन एवं उत्तक व्यवहार का पौधशाला और कार्य क्षेत्र में अनुप्रयोग पद्धतियां'', पर आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर में व.अ.सं. की युवा महिला वैज्ञानिकों ने 14 से 26 मार्च 2011 तक भाग लिया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर

''फाइटोकैमिकल विश्लेषण के लिए यांत्रिक तकनीकें'' विषय पर 14 से 16 दिसम्बर 2010 तक संस्थान में अल्पावधि प्रशिक्षण दिया गया जिसमें बंगलौर विश्वविद्यालय तथा क्यूवेम्पू विश्वविद्यालय से संबंद्ध विभिन्न कॉलेजों से सात भागीदारों ने प्रशिक्षण लिया।

''काष्ठ गुण अभिलक्षण'' पर भा.वा.अ.शि.प. के पांच वैज्ञानिकों के लिए 3 से 7 जनवरी 2011 तक विशिष्टीकृत प्रशिक्षण।

''काष्ठ पारिष्करण'' पर 27 और 28 जनवरी 2011 तक विशिष्ट प्रशिक्षण दिया गया। इसमें हाई बिल्ड कोटिंग प्राईवेट लिमिटेड (7 न.) के भागीदार शामिल हुए।

''चंदन बीज एवं नर्सरी तकनीकें'' पर संस्थान में 21 से 25 फरवरी 2011 तक अल्पावधि प्रशिक्षण चलाया गया जिसमें 30 भागीदार शामिल थे।

का.वि.प्रौ.स., बंगलौर में व.अ.सं. विश्वविद्यालय के तहत काम करने वाले पी एच डी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण, जिसका संचालन कोर्स संयोजक ने किया।

रसायन और चंदन उपयोजन पर 22 नवम्बर 2010 से 21 फरवरी 2011 तक देश के विभिन्न क्षेत्रों में किसानों और वृक्ष उत्पादकों को प्रशिक्षण दिया गया।

डॉ. आर सुंदरराज ने 22 फरवरी 2011 को आधुनिक विद्यार्थियों के समक्ष ''चंदन पौधशाला में नाशीकीटों का प्रबंधन'' पर व्याख्यान दिया।

व.अ.सं. विश्वविद्यालय के अनुसन्धान छात्रों के लिए 15 सितम्बर से 24 दिसम्बर 2010 तक अनिवार्य प्रशिक्षण कोर्स चलाया गया।

वैज्ञानिकों के लिए ''आई एफ आर आई एस (अनुसन्धान सूचना पद्धति माड्यूल)'' कार्यान्वयन पर 22 अप्रैल 2010 तथा 13 जुलाई 2010 को का.वि.प्रौ.सं., न्यू कम्प्यूटर लैब, बंगलौर में एक दिवसीय कार्यक्रम चलाए गए।

वैज्ञानिक के लिए ''आई एफ आर आई एस (अनुसन्धान सूचना पद्धति माड्यूल) नई परियोजना शुरूआत'' पर 8 दिसम्बर 2010 तथा फरवरी 2011 में, भा.वि.प्रौ.सं., न्यू कम्प्यूटर लैब, बंगलौर में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए।

व.अ.सं. सम विश्वविद्यालय के अनुसन्धान छात्रों के लिए छः माह का अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम।

''बाक्साइट खनन् के पर्यावरण पर समाघात, प्रबंधन उपाय तथा जनजातीय क्षेत्रों में बाक्साइट संदोहन के सामाजिक–आर्थिक और पारितंत्रीय पहलू'' पर आंध्र प्रदेश खनन् विकास निगम के जनजातीय प्रशिक्षाणार्थियों (अराकू घाटी) के लिए 1 अक्टूबर 2010 को दो प्रशिक्षण कार्यक्रम।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर

सी जी आर वी वी एन लिमिटेड के प्रशिक्षणार्थियों के लिए 17 और 18 मई 2010 को भैसाझार नर्सरी बिलासपुर में कृमि कम्पास्ट / जैव उर्वरक पर पशिक्षण।

परिवर्तन' पर प्रशिक्षण'' का आयोजन किया गया।

उड़ीसा वानिकी क्षेत्र विकास परियोजना कर्मियों के लिए राउरकेला तथा तलचर, उड़ीसा में क्रमशः 16 से 18 और 20 से 22 सितम्बर 2010 तक 'अहानिकर फसल, औषधीय तथा सुरभित पादपों सहित पक्रमण आर मल्य सयाजन का आयाजन किया गया। (एन टी पी एफ पी)।

मुझौली के किसानों के लिए एन ए बी ए आर डी प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत संस्थान में 21 दिसम्बर 2010 को ''बांस आधारित सिल्वी कृषि पद्धति तथा औषधीय पादप'' आधारित सिल्वी–औषधीय पद्धति पर प्रशिक्षण दिया गया।

कृषि वानिकी अनसन्धान पयाग पर जिला बालाघाट, एम पी के फोरेस्ट गार्ड प्रशिक्षणार्थियों के लिए 2 फरवरी 2011 को मंत्रालय में प्रशिक्षण दिया गया।

संस्थान में 22 से 24 मार्च 2011 तक एन टी पी सी कर्मियों के लिए ''पर्यावरण एवं वनीकरण'' पर प्रशिक्षण दिया गया।

''जट्रोफा और कारांजा'' के संयुक्त विकास पर क्रमशः प्रशिक्षकों और किसानों के लिए ग्वालियर और गुना, एम पी में प्रशिक्षण।

गोंदों के सतत संदोहन और सलाई, धावड़ा तथा अन्य गोंदों के ओलियोरेजिन पर 27 से 30 मार्च 2011 को शिओपुर–काला (म.प्र.) में प्रशिक्षण दिया गया।

पर्यावरणीय समस्याओं और हरित उपचार तथा औषधीय पादपों की खेती और प्रक्रमण पर 5 जून 2010 को छिंदवाड़ा केंद्र में प्रशिक्षण दिया गया।

मृदा संरक्षण और जलागम प्रबंधन पर केंद्र में 26 जुलाई 2010 को प्रशिक्षण दिया गया।

प्राकृतिक और पटालकोट, छिंदवाड़ा के भारिया जनजातियों को मार्गदर्शन पर 26 जुलाई से 4 अगस्त 2010 तक केंद्र में प्रशिक्षण दिया गया।

केंद्र द्वारा 20 और 21 जनवरी 2011 को औषधीय पादपों के संदर्भ में कृषि वानिकी पर प्रशिक्षण दिया गया।

''जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों'' पर केंद्र में 24 फरवरी 2011 को प्रशिक्षण दिया गया।

''अ.व.उ. मूल्यवृद्धि, प्रक्रमण तथा विपणन'' पर केंद्र में 4 मार्च 2011 को प्रशिक्षण दिया गया।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट

''जी पी एस की मूल बातों और वन संसाधन मानचित्रण में वैज्ञानिकों, अनुसन्धान अधिकारियों, अनुसन्धान फेलोज द्वारा उपयोग पर क्षमता वृद्धि'' हेतु 24 मार्च 2011 को व.व.अ.सं. में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

''उत्तरी भारत में बेंत की विविधताएं'' पर 25 से 29 नवम्बर 2010 तक फोरेस्ट प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया, जो अण्डमान और निकोबार तथा अरुणाचल प्रदेश से आए थे।

बेंत प्रदर्शन गार्डन में अरुणाचल प्रदेश से दौरे पर आए फॉरेस्टर प्रशिक्षणार्थी

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर

पंतीस किसाना आर कृषि विभाग, जिला श्रीगगानगर के कर्मियों के लिए, परती भूमियों की उत्पादकता वृद्धि पर प्रशिक्षण 2 जुलाई 2010 को दिया गया।

जल भागीरथी फाउन्डेशन, जोधपुर के सहयोग से किसानों और कार्य क्षेत्रीय कर्मियों को प्रशिक्षण तथा कार्यक्षेत्र का दौरा 13 अगस्त 2010 को किया गया।

भा.व.से. अधिकारियों के लिए 27 से 31 दिसम्बर 2010 तक, कमजोर रेगिस्तानी पारिपद्धति के सतत्

विकास हेतु संयुक्त रूप से उ.व.अ.सं. के लिए व.अ.सं., जबलपुर में कार्यक्रम चलाया गया। 27 से 29 मई 2010 तक "पौधशाला तकनीकों में नए

पादप ऊतक व्यवहार तथा जैव प्रौद्योगिकी पर ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण 1 से 14 जून 2010 तक दिया गया।

वन एवं कृषि उत्थान पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन शु.व.अ.सं. द्वारा विचार मंच, आबू रोड के साथ मिलाकर 5 मई 2011 को आयोजित किया गया जिसमें करीब 100 किसानों ने भाग लिया।

जी पी एस, आबादी आकलन, औषधीय पादपों की पहचान एवं प्रणाली विज्ञान, चयनित औषधीय पादपों का नमूना संग्रह आदि पर 3 मई 2010 को कार्यशाला/प्रशिक्षण का आयोजन एन एफ पी बी के तहत प्रायोजित नेटवर्क परियोजना के अंतर्गत किया गया जिसमें सभी अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए।

राज्य वन विभाग, हिमाचल प्रदेश के अग्रगामी स्टाफ के लिए संग्रह, परिरक्षण तथा शंकुवृक्षीय वनों में कोलोपेट्रा नाशीकीट द्वारा आक्रमण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, हि.व.अ.सं., शिमला में 15 अक्टूबर 2010 को दिया गया। इस प्रशिक्षण में कुल 20 कार्यक्षेत्रीय कर्मियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में पौधशाला नाशीकीट, कीटरोगजनक, भृंगों के एकत्रण की पद्धतियां, परिरक्षण पद्धतियां और

"शंकुवृक्षीय वनों पर आक्रमण करने वाले कोलोपेट्रा कीटों के संग्रह, परिरक्षण तथा अध्ययन" पर प्रशिक्षण

शंकुवृक्षीय वनों में होने वाले नुकसान के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। 28 जनवरी 2011 को औषधीय पादपों की खेती पर प्रशिक्षण दिया गया।

राज्य वन विभाग, जम्मू व कश्मीर कार्य क्षेत्रीय कर्मियों के लिए वन उत्पादकता वृद्धि पर 17 जनवरी 2011 को एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 32 कर्मियों ने भाग लिया।

"वन उत्पादकता वृद्धि" पर प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र, सारू, चम्बा में 14 फरवरी 2011 को "वानिकी हस्तक्षेप द्वारा निम्नीकृत क्षेत्रों का पारि–पुनर्स्थापन" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें करीब 45 राज्य वन विभाग कर्मियों ने भाग लिया जिनमें वन रक्षक और चम्बा, चुरू और डलहौजी वन प्रभागों के डिप्टी रेंजर्स शामिल थे। पंद्रह स्थानीय किसानों ने भी इसमें भाग लिया।

"वानिकी हस्तक्षेप से निम्नीकृत क्षेत्रों का पारि पुनर्स्थापन" पर प्रशिक्षण

"पौधशाला में लम्बे पादपों का उत्पादन: समस्याएं तथा उपाय" पर वन प्रशिक्षण संस्थान चैल में 15 फरवरी 2011 को एक दिवसीय प्रशिक्षण विचार–विमर्श का आयोजन किया गया। इसमें राज्य वन विभाग, हिमाचल प्रदेश के 30 कार्यक्षेत्रीय कर्मियों ने भाग लिया।

''नर्सरी में लम्बे पौधों का उत्पादन : समस्याएं तथा उपाय'' पर प्रशिक्षण

साई रोजा, बंजार, कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) में 19 फरवरी 2011 को ''औषधीय पादपों की खेती: ग्रामीण आय वृद्धि और विविधता का विकल्प'' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसम राज्य वन विभाग, हिमाचल पदश, एन जी आ,महिला मण्डल तथा वी एफ डी सी के सदस्यों सहित कुल 45 भागीदार शामिल हुए।

''औषधीय पादपों की खेती : विविधिकरण और ग्रामीण आय वृद्धि का विकल्प'' पर प्रशिक्षण

वन प्रशिक्षण संस्थान, चैल में 25 फरवरी 2011 को राज्य वन विभाग, हिमाचल प्रदेश के कार्य क्षेत्रीय स्टॉफ के लिए हिमाचल प्रदेश के औषधीय पादपों की पहचान, सतत् उपयोजन तथा संरक्षण पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें 64 कार्यक्षेत्रीय कर्मियों ने भाग लिया।

''हिमाचल प्रदेश के औषधीय पादपों की पहचान, सतत् उपयोजन तथा संरक्षण'' पर प्रशिक्षण

आदि के लिए ''किन्नौर जिले में वनीय खाद्य पादपों की स्थिति'' पर प्रशिक्षण दिया गया। इसमें 60 लोगों ने भाग लिया।

टाउन भारती (भोटा), जिला हमीरपुर (हि.प्र.) में 28 फरवरी 2011 को ''कृषि वानिकी प्रजातियों द्वारा मृदा उर्वरकता और पोषण तत्व प्रबंधन'' पर प शिक्षण आयाजित किया गया, जिसम 40 किसाना, एस एफ डी कार्यक्षेत्रीय कर्मियों तथा महिला मण्डल के सदस्यों ने भाग लिया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

वन अनुसन्धान केंद्र, मंदार में 22 और 23 फरवरी 2010 को एन ए आई पी के अंतर्गत ''वर्मी कम्पोस्टिंग'' पर किसानों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें गोड्डा जिले के 27 किसानों ने भाग लिया।

श्री चंडी प्रतिहार, वर्मी कम्पोस्ट परामर्शदाता, पश्चिम बंगाल द्वारा व्याख्यान तथा किसानों को एन ए आई पी (आई सी ए आर) परियोजना के तहत कार्य क्षेत्री प्रशिक्षण देते हुए

''वैज्ञानिक पद्धतियों से लाख उत्पादन'' पर रांका ब्लाक, गरवा जिला, झारखण्ड में 16 और 17 जून 2010 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 185 किसानों और खेती वालों ने भाग लिया।

व.उ.सं., रांची में ''औषधीय और एक्रोमिक पादप खेती'' पर 10 से 12 मार्च 2011 को प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें 25 किसानों ने भाग लिया।

व.उ.सं., रांची में 24 से 26 मार्च 2011 को ''बांस विस्तार, खेती एवं प्रबंधन–सतत् आजीविका'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 25 किसानों ने भाग लिया।

3.3 विदेशों के दौरे

डॉ. विमल कोठियाल, प्रमुख, एफ पी प्रभाग, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने कॉमनवेल्थ गेम्स के विशेषज्ञ टीम के सदस्य के रूप में फर्नीचर और उसकी गुणवत्ता का अनुमोदन करने हेतु जुलाई से 15 जुलाई 2010 तक चीन और मलेशिया का दौरा किया।

डॉ. सुधांशु गुप्ता, सचिव, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने वन प्रमाणन के लिए 12 से 28 मई 2010 तक स्वीडन का दौरा किया।

डॉ. ए. विजयराघवन, वैज्ञानिक– सी, डॉ. महेश्वर हेगड़े, वैज्ञानिक–सी, आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर और डॉ. आर. के. कलीता, वैज्ञानिक–सी, व.व.अ.सं., जोरहाट ने डी एस टी, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित और निधिकृत सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिक के राष्ट्रीय कार्यक्रम में भाग लेने हेतु ताईवान का दौरा किया।

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक तथा श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, बी सी सी, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन समझौते में भाग लेने हेतु 31 मई से 11 जून 2010 तक जर्मनी का दौरा किया।

डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक तथा डॉ. एन. एस. के. हर्ष, वैज्ञानिक–एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने चयनित वृक्षों के परिरक्षण और उपचार के प्रदर्शन तथा अग्र कार वृक्षों की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संयोजन समिति (आई सी सी) के समक्ष प्रस्तुति देने हेतु [illegible] 17 मार्च 2011 को 13 [illegible] 2010 तक [illegible] का दौरा किया। मण्डलों

मोहम्मद युसुफ, वैज्ञानिक–एफ, उ.व.अ.सं., जबलपुर ने हाइमेनोप्ट्रिस्ट की 7वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लेने हेतु हंगरी का दौरा किया।

डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने वानिकी विद्यालय डीन मीटिंग एशिया प्रशस्त्र क्षेत्र–सतत् वन प्रबंधन हेतु वानिकी शिक्षा में भाग लेने हेतु 21 से 23 जुलाई 2010 तक चीन का दौरा किया।

डॉ. एस. ए. अंसारी, वैज्ञानिक– एफ, उ.व.अ.सं., जबलपुर ने डब्ल्यू जी जी डब्ल्यू तथा एक्पो–10 में भाग लेने हेतु 23 से 27 जुलाई 2010 तक लंदन, यू. के. का दौरा किया।

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, डॉ. एन. के. वासु, निदेशक, व.व.अ.सं., जोरहाट, डॉ. ओ. के. रमादेवी, वैज्ञानिक– एफ, डॉ. वी. पी. तिवारी, वैज्ञानिक–एफ, डॉ. श्याम विश्वनाथ, वैज्ञानिक– ई, आई डब्ल्यू एस टी, बंगलौर, डॉ. आर यशोदा, वैज्ञानिक– ई, डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक– डी, आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर, डॉ. ओमबीर सिंह, वैज्ञानिक–सी, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून, डॉ. बी. दिवाकर, वैज्ञानिक–सी, व.उ.सं., रांची, सुश्री नजत–उल्ल–क्यूम क्वाजी, एस आर एफ, सुश्री प्रीति चौहान, एस आर एफ, सुश्री शिवानी डोभाल, अनुसन्धान स्कालर, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून तथा सुश्री धन्या भास्कर, एस आर एफ, आई डब्ल्यू एस टी, बंगलौर ने तेइसवें विश्व आई यू एफ आर ओ कांग्रेस में भाग लेने हेतु 23 से 28 अगस्त तक दक्षिणी कोरिया का दौरा किया।

श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने, यू एन जलवायु परिवर्तन समझौता में भाग लेने हेतु 2 से 6 अगस्त 2010 तक जर्मनी का दौरा किया।

डॉ. गीता जोशी, वैज्ञानिक–डी, सा.वि.प्रौ.सं., बंगलौर तथा सुश्री पूनम दूबे, अनुसन्धान स्कॉलर, उ.व.अ.सं., जबलपुर ने आई यू एफ आर ओ वृक्ष बीज सिम्पोजियम में भाग लेने हेतु 15 से 21 अगस्त 2010 तक ताईवान का दौरा किया।

हेतु 22 से 27 अगस्त 2010 तक हंगरी का दौरा किया।

श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, बी. सी. सी. प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन वार्ता में भाग लेने हेतु 2 से 9 अक्टूबर 2010 तक चीन का दौरा किया।

डॉ. गिरीश चंद्रा, वैज्ञानिक–सी, उ.व.अ.सं., जबलपुर ने एप्लाइड सांख्यिकी पर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता हेतु 19 से 22 सितम्बर 2010 तक स्लोवीनिया का दौरा किया।

डॉ. बी.एन. दिवाकर, वैज्ञानिक–सी, व.उ.सं., राची न "अतराष्ट्रीय सिम्पाजियम डी ए डी आ बी ए टी 2010" में भाग लेने हेतु 25 से 27 अक्टूबर 2010 तक बेनिन का दौरा किया।

डॉ. जी. एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने सार्क वन केंद्र में गवर्निंग बॉडी की चौथी बैठक में भाग लेने हेतु 20 और 21 अक्टूबर 2010 को भूटान का दौरा किया।

डॉ. संगीता गुप्ता, वैज्ञानिक–ई, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने काष्ठ वृद्धि पर अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार मे भाग लेने हेतु 23 से 26 अक्टूबर 2010 तक चीन का दौरा किया।

डॉ. सुधांशु गुप्ता, सचिव, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने वन प्रमाणन पर एस.आई.डी.ए. द्वारा वित्त पोषित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वितीय भाग में भाग लेने हेतु 3 से 13 नवम्बर 2010 तक मोजाम्बीक का दौरा किया।

डॉ. एस. एस. नगी, निदशक, वन अनुसन्धान सस्थान, देहरादून ने डी ए ए डी आटम स्कूल में "अंतर्राष्ट्रीय स्कूल नेटवर्किंग, आर्थिक पद्धतियां नीतियां, शिक्षा और भविष्य की रणनीतियां" में भाग लेने के लिए 8 से 18 नवम्बर 2010 तक जर्मनी का दौरा किया।

डॉ. राजीव पाण्डे, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने एशिया प्रशांत क्षेत्र में वानिकी शिक्षा एवं अनुसन्धान पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने हेतु 23 से 25 नवम्बर 2010 तक फीलिपीन्स का दौरा किया।

एन एफ सी सी की बठक म भाग लन हत 29 नवम्बर से 10 दिसम्बर 2010 तक मैक्सीको का दौरा किया।

डॉ. महेश्वर हेगड़े, वैज्ञानिक–डी, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने जीवजंतु एवं वनस्पति की प्रजाति खोज पर अंतर्राष्ट्रीय अवधारणाएं पर सिटीज की बैठक में भाग लेने हेतु 9 से 11 जनवरी 2011 तक नेपाल का दौरान किया।

श्री सदीप त्रिपाठी, निदशक (अनुसन्धान), भा.वा.अ.शि.प. देहरादून ने पूर्वी हिमालय क्षेत्रीय कार्यशाला, वन तथा जलवायु परिवर्तन पर बैठक में भाग लेने हेतु 24 से 28 जनवरी 2011 तक नेपाल का दौरा किया। डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक, डॉ. एन. एस. के हर्ष, वैज्ञानिक– एफ तथा डॉ. सुभाष नौटियाल, वैज्ञानिक – एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने परामर्शी परियोजनाओं के तहत परियोजना संबंधी अध्ययन क लिए टा पाहम टम्पल (चाथा इनक्लाजर) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण परियोजना के चौथे फेज के तहत वृक्षों के परिरक्षण और संरक्षण उपचार हेतु स्थानीय दायित्वधारियों के सक्रिय सहयोग से टा प्रोहम टेम्पल (कम्बोडिया) के संरक्षण और पुर्नद्धार के लिए एम ओ ई एफ, भारत सरकार के आई टी ई सी कार्यक्रम के अंतर्गत 10 से 20 फरवरी 2011 तक कम्बोडिया का दौरा किया।

डॉ. संगीता गुप्ता, वैज्ञानिक–ई, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून को 2010 अंतर्राष्ट्रीय काष्ठ संवृद्धि सिम्पोजियम शांक्सी, चीन में 22 से 26 अक्टूबर 2010 तक यॉगलिंग, शांक्सी में अतिथि वक्ता के रूप में बुलाया गया। उनके एक विद्यार्थी ने जर्मनी और लोस वेगस में प्रलेख प्रस्तुत किया।

सुश्री शिवानी डोभाल, वैज्ञानिक डब्ल्यू ओ एस–बी ने आई यू एफ आर ओ विश्व कांग्रेस की 23वीं बैठक में सियोल, कोरिया में 23 से 28 अगस्त 2010 तक भाग लिया।

सुश्री प्रीति चौहान, एस आर एफ ने 23 से 28 अगस्त 2010 तक आई यू एफ आर ओ विश्व कांग्रेस की 23वीं बैठक में सियोल, कोरिया में भाग लिया।

डॉ. एन. एस. क. हर्ष, वज्ञानिक–एफ, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने 5 से 13 जून 2010 तक

[illegible] संयोजन समिति की बैठक के 19 तकनीकी सत्र में भाग लिया और ए डी–एस ओ सी विशेषज्ञों के कार्यक्षेत्र भ्रमण और आई सी सी बैठक के उपरांत परियोजना क्रियाकलापों से पहले प्रस्तुतिकरण में भाग लिया।

डॉ. एन. एस. क हष, व ज्ञानिक– एफ, वन अनुस न्धान संस्थान, देहरादून ने 9 से 16 फरवरी 2011 के दौरान परियोजना संबंधी अध्ययनों और कार्यों तथा स्थानीय दायित्वधारियों की सक्रिय भागीदारी के साथ वृक्षों के संरक्षण और परिरक्षण पर परामर्शी परियोजनाओं के तहत टा प्रोहम टेम्पल (चौथा इन्क्लोजर) सीम राप कम्बोडिया का दौरा किया (विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के आई टी ई सी कार्यक्रम के तहत टा प्रोहम टेम्पल (कम्बोडिया) के संरक्षण और पुर्नस्थापन पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की परियोजना)।

श्री एस. के. शंमघुसुंदरम, एच डी ओ ने सेवा कालीन प्रशिक्षण फेज 4 के तहत 19 जून से 4 जुलाई 2010 तक यू एस ए का दौरा किया।

डॉ. महेश्वर हेगड़े ने अहानिकर निष्कर्षों और पादप प्रजातियों के प्रमुख व्यापार की समीक्षा के लिए 9 से 11 जनवरी 2011 तक होटल एवरेस्ट, काठमांडू, नेपाल मे अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला मे भाग लिया। इस अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय (एशियाई देश) कार्यशाला का आयोजन काठमांडू नेपाल में सिटीज प्रबंधन प्राधिकारियों द्वारा सिटीज सचिवालय जेनेवा स्विटजरलैण्ड के सहयोग से किया गया।

श्री एम. लोकेश्वर राव, भा.व.से. ने सेवाकालीन पि शक्षण कायक्रम क दारान य एस ए का दारा किया।

डॉ. एन. रामा राव, वैज्ञानिक–एफ ने भुनाखा और सकाश ा जल–विद्युत परियाजनाआ पर इ आइ ए तथा ई एस पी अध्ययनों के लिए भूटान का दौरा किया।

डॉ. गीता जोशी ने आई यू एफ आर ओ वृक्ष बीज सिम्पाि जयमः बीज अनुसन्धान पर हाल ही म की गइ प्रगति तथा परास्थानिक संरक्षण हेतु टाइपी ताइवान का 16 से 18 अगस्त 2010 तक दौरा किया।

डॉ. [illegible] वैज्ञानिक–[illegible] ने, 21 वीं सी सी [illegible], भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने सी ओ पी–10 से [illegible] जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियां पर अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लेने हेतु 7 से 9 दिसम्बर 2010 तक पृथक्करण बांस की क्षमता तथा तेजी से उगने वाले उष्णकटिबंधीय वृक्ष पर प्रलेख प्रस्तुत किया।

डॉ. सजय सिह, व ज्ञानिक–डी तथा श्री सत्य प्रकाश मिश्र, एस आर एफ ने खाद्य ऊर्जा सुरक्षाः कमी और सुअवसर में पर्यावणीय सहायता पर एशियाई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बैंकाक, थाइलैण्ड में 22 से 25 मार्च 2011 तक भाग लिया।

3.4 सेमीनार/सिम्पोजियम/कार्यशाला/प्रशिक्षणों में भागीदारी

भा.वा.अ.शि.प. (मुख्यालय तथा संस्थान) के व ज्ञानिका/अधिकारिया/अनुसन्धानकताआ न निम्नलिखित सम ीनार/सिम्पा जियम/कायश ाला/प्रशिक्षणों में भाग लिया।

कायम्बटर म वाटस, बग लार द्वारा 1 फरवरी 2010 काआयाि जत वतमान विश्लषणात्मक परिवतना स निपटनक उपाय पर जल पाद्यागिकी समीनार म भाग लिया।

6 आर 7 फरवरी 2010 का दन विश्वविद्यालय, दहरादन में द्वितीय राष्ट्रीय युवा सम्मेलन 2010 में भाग लिया।

"प्रौद्योगिकी में उन्नति" पर छठी राष्ट्रीय सम्मेलन– 2010 के विशेष संदर्भ में, विषय, सूचना प्रौद्योगिकी और ऊर्जा प्रबंधन जो एल ए संस्थान समूह, मथुरा, उ.प्र. 20 और 21 फरवरी 2010 को भाग लिया।

"औषधीय पादपों तथा अकाष्ठीय वन उत्पादों के संरक्षण, सुधार तथा सतत् उपयोग" पर राष्ट्रीय सम्मेलन 9 और 10 मार्च 2010 तक रांची में आयोजित किया गया।

व.आ.कृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में आयोजित एफ जी आर एम एन राष्ट्रीय कार्यशाला 9 और 10 मार्च 2010।

और उपयोजनः वर्तमान प्रवृत्तियां तथा भविष्य की संभावनाओं'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन। क्षेत्रीय पादप संसाधन केंद्र, उड़ीसा सरकार द्वारा राज्य चिकित्सा प्लान्ट बोअर, उड़ीसा सरकार द्वारा भुवनेश्वर में 8 और 9 अप्रैल 2010 को आयोजित किया गया।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 13 अप्रैल 2010 को संयुक्त वन प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सी एम डी वनीकरण तथा पुनर्वनीकरण परियोजनाओं पर मोडल्टीज और प्रक्रियाओं पर संवेदी प्रशिक्षण कार्यक्रम 16 और 17 अप्रैल 2010 को आयोजित किया गया।

खाद्य आंर कृषि क लिए पादप आनुवशीय ससाधना का सतत् उपयोजन और संरक्षण पर एन बी पी जी आर, नई दिल्ली में राष्ट्रीय कार्यशालाः ग्लोबल प्लान एक्शन 17 अप्रैल 2010 को आयोजित किया गया।

सृजनशीलता आंर नवीनीकरण पर पशिक्षण कायक्रम। ए एस सी आई, हैदराबाद द्वारा 1 से 7 मई 2010 को आयोजित किया गया।

जैवविविधता डाटा प्रापण एवं प्रकाशन पर प्रशिक्षण कार्यशाला भारतीय वनजीव संस्थान द्वारा 4 से 7 मई 2010 को आयोजित किया गया।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा इडुसाट समन्वयक कार्यशाला 7 मई 2010 को आयोजित किया गया।

वन्यजीव तथा जैवविविधता संरक्षण के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन पर शेर–ए–कश्मीर, कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, कश्मीर, श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर, भारत, 3 से 5 जून 2010 को आयोजित किया गया।

सी आइ आइ, दहरादन द्वारा 5 जन 2010 का द्वितीय पयावरणीय शिखर सम्मलन का आयाजन किया गया।

जन वन अतःसबध पर पाखरा, नपाल म राष्ट्रीय सम्मलन, 6 और 7 जून 2010 को अयोजित किया गया।

राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन, फरीदाबाद में टेन्डरिंग और कान्ट्रेटिंग का प्रशिक्षण 14 से 18 जून 2010 को किया गया।

विकास पर प्रशिक्षण 14 से 18 जून 2010 को किया गया।

ई आई ए जैवविविधता डाटा प्रकाशन संरचना के विकास पर कायश ालाः भारतीय सच ालन परियाज ना, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून मे 23 से 25 जून 2010 को आयोजित किया गया।

कॉलेजक, हंगरी में हाइम्नोपेट्रिस्ट पर सातवीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस पर 20 से 26 जून 2010 को आयोजित किया गया।

5 से 9 जुलाई 2010 तक वन आनुवंशीय संसाधनों का संरक्षण, पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला। भा.वा.अ.शि. प., एफ आर आइ एम, ए पी ए एफ आर आइ,जव अतराष्ट्रीय द्वारा सह–आयाजित आंर आइ टी टी आ
द्वारा सहायता पाप्त कायशाला का आयाजन वन आनुव शिकी एव वृक्ष पजनन, कायम्बटर म किया गया। पादप प्रजनन तथा जीनोमिक्स पर तीसरी राष्ट्रीय कागस का आयाजन तमिलनाड कृषि विश्वविद्यालय, कायम्बटर म 7 स 9 जलाइ 2010 तक म किया गया।

जैवविविधता पर जलवायु परिवर्तन का समाघात तथा थार के रेगिस्तान की चुनौतियों पर राष्ट्रीय सेमीनार, 9 जुलाई 2010 को रेगिस्तान क्षेत्रीय केंद्र, भारतीय जंतु विज्ञान सर्वेक्षण, जोधपुर द्वारा आयोजित किया गया।

इमेज प्रोसेसिंग कम्प्यूटर विजन तथा पद्धति मान्यता आई पी सी वी 2010 पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन लास वेगाम यू एस ए, में12 से 15 जुलाई 2010 को किया गया।

पुरातत्व विज्ञान पर राष्ट्रीय कार्यशाला, नई दिल्ली 17 और 18 जुलाई 2010 को आयोजित किया गया।

पर्यावरणीय निम्नीकरण से निपटने के उपायों पर राष्ट्रीय सेमिनार गुजरात पारितंत्रीय आयोग द्वारा गांधीनगर में 26 और 27 जुलाई 2010को आयोजित किया गया।

कम्प्यटर गाफिक्स–दृश्य कम्प्यटर विजन तथा इमप्रोसेसिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन फ्रेबर्ग, जर्मनी में 27 से 29 जुलाई 2010 को आयोजित किया गया।

भेषजीय अनुसन्धान पर आधुनिक प्रवृत्तियां औषधीय तथा सुरभित पादपों का सतत् उत्पादन पर राष्ट्रीय सेमीनार, एम एम विश्वविद्यालय, मुलाना में 7 और 8 अगस्त 2010 को आयोजित किया गया।

2007–2010 के दौरान डी यू सी टेस्ट के आयोजन की समीक्षा पर कार्यशाला राष्ट्रीय कृषि अनुसन्धान पबधन अकादमी, हदराबाद म 11 आर 12 अगस्त 2010 का किया गया।

जैवविविधता का महत्व, संरक्षण और सतत् उपयाजन पर पशिक्षण कार्यक्रम। तमिलनाड सरकार द्वारा III बैच– पोलाची शैक्षिक जिला स्कूल के विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए निधिकृत। आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर में आयोजित 18 अगस्त 2010 को आयोजित किया गया।

सतत् विकास के लिए जैवविविधता : आशंकाएं, सूचक, जलवायु परिवर्तन, गरीबी उन्मूलन तथा जैवविविधता रक्षण के लिए लक्ष्य पर राष्ट्रीय कार्यशाला पादप विज्ञान विभाग, जैवविविधता केंद्र एव वनीय अध्ययन, मदरयी, कामराज विश्वविद्यालय, मदुरैयी द्वारा 25 और 26 अगस्त 2010 को आयोजित किया गया।

भविष्य के लिए वनः सतत् समाज और पर्यावरण पर आई यू एफ आर ओ विश्व कांग्रेस द्वारा सियोल, दक्षिण कोरिया में 23 से 28 अगस्त 2010 को आयोजित किया गया।

''अनुसन्धान आवश्यकताएं तथा वित्तीय तकनीकी आर क्षमता। जलवाय परिवतन की चिताआ स निपटनम बाधाए आर भारत म वन तथा वन उत्पाद'' पर बैठक और कार्यशाला टी एफ आर आई, जबलपुर, में 1 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

लाल सूची में दर्ज औषधीय पादपों का संरक्षण तथा सतत उपयाजन पर राष्ट्रीय समीनार न्यमन्स कालज, थोड्डपुजा, केरल में 2 और 3 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

जड़ीय औषधियों पर राष्ट्रीय सम्मेलन। वनस्पति विभाग, भाराथियार विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर द्वारा 8 और 9 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सक्षम बनाने हेतु कार्यशाला, के एफ आर आई, पिच्ची, केरल, 13 और 14 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

कमलेर बी पारिस्थितिए के, प्रबंधन राष्ट्रीय सेमिनार: अनुसन्धान आवश्यकताएं तथा प्रायद्वीपीय भारत में प्राथमिकताएं पर एम ई एस, ए एफ एम ए बी आई कॉलेज, पी. वेम्वालूर, कोडंग्लर, थिरसुर जिला, केरल में 15 और 16 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

फसली पादपों के उत्पाद, गुणवत्ता सुधार में मनोवैज्ञानिक और आण्विक बाधाएं पर एस वी बी पी, मेरठ में 17 और 18 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

भविष्य की रोपणियों में शीशम मृत्यता रोकने के उपाय पर देहरादून में 20 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः इन्डियाज 2010। इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा इलाहाबाद में 19 से 21 सितम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

प्रायोगिक सांख्यिकी 2010 पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला, रिब्नो, स्लोवेनिया में 19 से 22 सितम्बर 2010 तक आयोजित किया गया।

''भूकम्परोधी अभिकल्प एवं निर्माण पद्धतियां'' पर प्रशिक्षण कार्यशाला, सी बी आर आई, रूड़की में 21 से 24 सितम्बर 2010 तक आयोजित किया गया।

मूल्यांकन और सत्यापन पर यूनिस्को तथा यू एन डी पी (भारत), नई दिल्ली में कार्यशाला 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2010 तक आयोजित किया गया।

मानव और सामाजिक कल्याण के लिए राष्ट्रीय सेमीनार, यश कृषि तकनीकी एवं विज्ञान केंद्र, इलाहाबाद द्वारा 3 और 4 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

जैव संसाधन प्रौद्योगिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन निर्मला (महिला) कॉलेज, कोयम्बटूर में 7 और 8 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

जीवविज्ञानीय डाटा विश्लेषण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन। जैव सूचना केंद्र, सी पी सी आर आई, कसारकोड, केरल द्वारा 10 से 12 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

रेगिस्तान जैवविविधता कार्यशालाः घासों, वृक्षों तथा जीवों के संरक्षण की प्राथमिकता।

डब्ल्यू डब्ल्यू एफ– भारत, मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, आई एन ए सी एच, ए एफ आर आई, टाईगर वॉच, बिश्नोई टाईगर वन्य एवं पर्यावरण संस्था तथा टी डब्ल्यू एस आई द्वारा ए एफ आर आई, जोधपुर में 11 आर 12 अक्टबर 2010 का आयाजित किया गया।

भा.व.से. अधिकारियों के लिए वन आनुवंशिकी संसाधन प्रबंधन कार्यशाला पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 19 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

थार रेगिस्तान पारिपद्धति में भूमि निम्नीकरण या नियंत्रण के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सतत् भागीदारी प्रबंधन जल भागीरती फाउन्डेशन, बिजोलिया, जोधपुर (राजस्थान) में 20 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

2010 में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में राज्य जैव प्रौद्योगिकी कार्यक्रम के तहत 27 सितम्बर से 8 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

जैवकीटनाशक सम्मेलन में नवीन प्रवृत्तियां (बी ई टी 2010), खाद्य और पर्यावरणीय सुरक्षा में जैव कीटनाशक, हिसार (हरियाणा) में 20 से 22 अक्टूबर 2010 तक आयोजित किया गया।

2010 अंतर्राष्ट्रीय काष्ठ संवृद्धि सिम्पोजियम, शांक्सी चीन में 22 से 26 अक्टूबर 2010 को यांगलिंग, शांक्सी में आयोजित किया गया।

जैवविविधता संरक्षण में वैज्ञानिकों की भूमिका पर प्रशिक्षण कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून द्वारा 25 से 29 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया।

नैनो सेंसर और प्रौद्योगिकी पी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला पर सी एफ आई ओ, चण्डीगढ़ में 28 से 30 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया। जैवविविधता संरक्षण पर क्षेत्रीय कार्यशाला, पंचमढ़ी जैवरिजर्व द्वारा संवाद सदन छिंदवाड़ा द्वारा 7 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

पांचवीं उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस पर दून विश्वविद्यालय, देहरादून में 10 से 12 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

पच्चीसव काबाहाइड्रट काफ्रस, शिमला विश्वविद्यालय म 11 स 13 नवम्बर 2010 तक आयाजित किया गया। लघु वनोपज के सतत् वन प्रबंधन में महिला वन समिति के सदस्यों की सहभागिता पर क्षेत्रीय कार्यशाला राज्य वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर में 16 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया। जलवायु क्रम के पुनर्स्थापन हेतु पृथ्वी को ठंडा रखने की रणनीति और ग्रह को बचाने का प्रयास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर्यावरणीय विज्ञान विभाग, जी बी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा 15 से 17 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

उर्वरकों पर सम्मेलन, बिसरा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, रांची में 6 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

जैवविविधता एवं जैवप्रौद्योगिकीः जैवविविधता संसाधन प्रबंधन एवं सतत् विकास सम्मेलन वनस्पति एवं जैवप्रौद्योगिकी विभाग, सरकार, न्यू साइंस कॉलेज, रेवा, एम. पी. द्वारा 16 और 17 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

डॉ. गिरीश चंद्र ने भाग लिया तथा रैंकड सेट सैम्पलिंग थ्योरी, लार्ज सेट साईज पर प्रलेख प्रस्तुत किया, जिसमें आनुपातिक एवं साईज मैट्रिकस में सांख्यिकी, गणित और संबद्ध विज्ञानों का इंटरफेस निहित था। इसका आयोजन कुमांऊ विश्वविद्यालय, कैम्पस अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में 20 से 22 नवम्बर 2010 तक किया गया।

प्राकृतिक उत्पादों और परंपरागत औषधियों से दवाईयां पर खोज और नए विकास पर द्वितीय द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, राष्ट्रीय भेषज शिक्षा एवं अनुसन्धान संस्थान, चंडीगढ़ में 20 से 24 नवम्बर 2010 तक आयोजित किया गया। जैवविज्ञानों में वर्तमान प्रगति पर राष्ट्रीय सेमीनारः स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं कृषि में अनुसंधान। वनस्पति विभाग, हितकारी, महिला महाविद्यालय, जबलपुर में 23 और 24 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

जल संरक्षण एवं वर्षा जल संचय पर भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण योजना। वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर (राजस्थान) में 22 से 26 नवम्बर 2010 तक आयोजित की गई।

फोल्क तथा जड़ीय औषधियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, उदयपुर, राजस्थान में 25 से 27 नवम्बर 2010 तक आयोजित किया गया।

पादप आकारिकी पर सम्मलन। बी एच य वाराणासी म 25 से 27 नवम्बर 2010 तक आयोजित किया गया।

वर्गीकरण पादप वैविध्य तथा संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 26 से 28 नवम्बर 2010तक वानस्पति विभाग, भट्टाथियार, विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर, तमिलनाडु में आयोजित किया गया।

''जलवायु परिवर्तन के साथ चावल की निरंतरता'' पर राष्ट्रीय सेम्पोजियम, 27 से 29 नवम्बर 2010 तक केंद्रीय चावल अनुसन्धान संस्थान, कटक में आयोजित किया गया।

कार्मिक और कर्मचारी कार्य संतुष्टि पर भा. व. से. अधिकारियों की कार्यशाला, आई एम टी आर, गोवा में 2 और 3 दिसम्बर 2010 आयोजित की गई।

''वर्तमान परिदृश्य में जीव विज्ञानीय अनुसंधान का भूमण्डलीय संदर्श'' पर राष्ट्रीय सेमीनार, वनस्पति विभाग, दयानंद गर्ल्स (पी जी) कॉलेज, कानपुर में 7 और 8 दिसम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

''ऊजा, पयावरण तथा विकास 2010'' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, उड़ीसा में 10 से 12 दिसम्बर 2010 तक आयोजित किया गया।

''पादप एवं पर्यावरण प्रदूषण'' पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 8 से 11 दिसम्बर 2010 तक पर्यावरणीय वनस्पतियों तथा राष्ट्रीय वनस्पति संस्थान, लखनऊ की अतराष्ट्रीय सासाइटी द्वारा आयाजित किया गया।

आर ई टी प्रजातियों के विशेष संदर्भ में औषधीय पादपों के संरक्षण, सतत् संग्रह, प्रक्रमण तथा विपणन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, बंगलौर में 11 और 12 दिसम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

जैवविविधता : चुनौतियां और समस्याओं पर भा.वा. अ.शि.प., देहरादून द्वारा 6 दिसम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

बहुविद्याक्षेत्रीय सूक्ष्म जीवविज्ञान में हाल ही में हुई प्रगति : अवसर और चुनौतियां पर ए. एस. आई. 2010– सी. एम. ए., बी. आई. टी. मेसरा 14 से 17 दिसम्बर 2010 तक आयोजित की गई।

माता गुजरी गर्ल्स कॉलेज, जबलपुर, मध्य प्रदेश में महिला विज्ञान सम्मेलन, 18 और 19 दिसम्बर 2010 तक आयोजित की गई।

भारत में सतत् वन्यजीव प्रबंधन और अहानिकर व्यापार को सुनिश्चित करने हेतु सिटीज कर्यान्वयन क्षमता को शक्तिशाली बनाना पर 20 और 21 दिसम्बर 2010 को भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून में आयोजित किया गया।

फाइटाकमिस्ट्री तथा आयुर्वेद पर सातवा सम्पाजियमः देहरादून में क्षमता और सुअवसर पर 25 दिसम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

उष्णकटिबंधीय पारिपद्धतिः संरचना क्रियाकलापों एवं सेवाएं, आई एफ जी टी आर में 28 से 29 दिसम्बर 2010 को आयोजित किया गया।

कृषि वानिकी विस्तार–समस्या एवं महत्व पर कार्यशाला विस्तार एवं अनुसन्धान सर्कल, जबलपुर द्वारा 29 दिसम्बर 2010 को आयोजित किया गया। आर ए पी डी और माइक्रोसेटेलाइट तकनीकों का अनुशरण करते हुए डी एन ए अंगुलीछाप पर विशिष्ट प्रशिक्षण पर राजीवगांधी जैवप्रौद्योगिकी केंद्र, थीरू अनन्तपुरम में 27 दिसम्बर 2010 से 14 जनवरी 2011 तक आयोजित किया गया। भारतीय विज्ञान हर्बल अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी और औषधीय तथा सुरभित उत्पादों और तैयार उत्पादों (एच आई– एम ए पी एस) पर शिखर सम्मेलन। एसोसिएट चेम्बर्स ऑफ कामर्स और भारतीय उद्योग द्वारा 15 और 16 जनवरी 2011 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

जट्रोफा, जैवईंधन पादप पर कार्यशालाका एस एन त्रिपाठी मेमोरियल फाउन्डेशन द्वारा जिला चंदोली में 18 जनवरी 2011 को आयोजन किया गया।

नई अपेक्षाएं और भविष्य भारत में काष्ठ विज्ञान एवं पाद्यागिक काष्ठ विज्ञान एव काष्ठ पाद्यागिकी सस्थान बगलार म 20 जनवरी 2011 का आयाजित किया गया।

नना तकनीक पर पशिक्षण। भारतीय विज्ञान सस्थान, बंगलौर द्वारा 18 से 20 जनवरी 2011 तक आयोजित किया गया।

जलवायु परिवर्तन तथा अनुकूलन पर सेमीनार सेंट फ्रेन्सिस महिला विद्यालय द्वारा 20 जनवरी 2011को आयोजित किया गया।

नवीनीकरण योग्य ऊर्जा स्रोतों की वर्तमान प्रवृत्तियां, आई आई सी टी, हैदराबाद द्वारा 28 से 30 जनवरी 2011 को आयोजित किया गया।

वानिकी और पारिपद्धति में सुदूर संवेदन तथा जी आई एस अनुप्रयोग पर प्रशिक्षण। आई आई आर एस, देहरादून द्वारा 31 जनवरी से 11 फरवरी 2011 को आयोजित किया गया।

वानिकी में आधारिक सुदूर संवेदन और जी आई एस अनुप्रयोग पर दो सप्ताह का प्रशिक्षण कोर्स। वानिकी एवं पारिपद्धति प्रभाग, आई आई आर एफ, आई एस आर ओ, देहरादून द्वारा 31 जनवरी 2010 से 11 फरवरी 2011 को आयोजित किया।

''मानव कल्याण हेतु जीवन विज्ञान की प्रगति'' राजकीय मॉडल साइंस कॉलेज, जबलपुर में 5 और 6 फरवरी 2011 को आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय बांस मिशन के अंतर्गत बांस पर कृषि विभाग द्वारा आबू रोड, सिरोही राजस्थान में 3 फरवरी 2011 को सम्मेलन आयोजित किया गया।

''जलवायु परिवर्तन और वन'', पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, बी सी सी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 31 जनवरी से 4 फरवरी 2011 तक आयोजित।

दिल्ली सतत् विकास शिखर सम्मेलन 2011, नई दिल्ली। ऊर्जा अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 3 स 5 फरवरी 2011 तक पायाजित किया गया।

भारत में पादप ऊतक व्यवहार और जैवप्रौद्योगिकी अनस न्धान तथा बत्तीसव पादप ऊतक सवद्धि सघ की वार्षिक बैठक (भारत) में 4 से 6 फरवरी 2011 तक आयोजित।

अल्प चक्रानक्रमीय वानिकी पर आइ य एफ आर आसम्पा जयमः काष्ठ उत्पाद परिदृश्य तथा पयावरणीय सधार पर पी ए य, लधियाना म 10 स 12 फरवरी 2011 तक आयोजित।

आठवी अखिल जन पाद्यागिकी कागस पर साइस सिटी और ऊर्जा पार्क, कोलकत्ता, 11 और 12 फरवरी 2011 तक आयोजित।

स्थानीय जैवविविधता रक्षण के लिए पवित्र वृक्ष वाटिकाओं के संरक्षण पर राष्ट्रीय कार्यशाला, सी पी आर पर्यावण शिक्षा केंद्र, चेन्नई में 12 से 14 फरवरी 2011 तक आयोजित की गई।

''जलवाय परिवतन'' पर राष्ट्रीय समीनार, जवविविधता आर सर क्षणपर सट एन्डज पी जी कालज, गारखपर म 16 आर 17 फरवरी 2011 तक आयाजित किया गया।

''बास पसारण, पबधन तथा उपयाजन'' पर हाल म की गइ पग ति पर राष्ट्रीय समीनार, का.वि.पा.स., बगलार म 17 स 18 फरवरी 2011 तक आयाजित किया गया।

''कृषि प्रौद्योगिकी द्वारा खदान, पोषण एवं पर्यावरण सुरक्षा'' पर सेमीनार। कृषि अनुसन्धान स्टेशन, केश्वाना, जेलोर में 18 फरवरी 2011 तक आयोजित किया गया।

''गैर प्रकाष्ठीय उत्पाद विपणनः समस्याएं और रणनीतियां'' पर राष्ट्रीय कार्यशाला, एन टी एफ पी प्रभाग, उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा आयोजित तथा एम पी ट्रेडिंग और विकास कोआपरेटिव संघ, भोपाल द्वारा 19 फरवरी 2011 तक प्रायोजित।

तेरहवीं भारतीय कृषि वैज्ञानिक और किसान कांग्रेस पर बायाव कृषि आर तकनीकी अनसन्धान, इलाहाबाद द्वारा 19 और 20 फरवरी 2011 तक आयोजित।

भू–दृश्य प्रक्रिया पर राष्ट्रीय सम्मेलन–चुनौतियां और सुअवसर पर वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 22 और 23 फरवरी 2011 तक आयोजित।

''नाशीकीट प्रबंधन'' पर सेम्पोजियम। कीटविज्ञान अनुसन्धान संस्थान, सेंड एक्जाविट कॉलज, पलायमकोट्टइ, 23 से 25 फरवरी 2011 तक आयोजित।

''राजस्थान में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिए विज्ञान आधारित नीति विकल्प'' पर कार्यशाला। राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जयपुर द्वारा अयोजित, 24 और 25 फरवरी 2011 तक आयोजित।

नौवीं सी वाई एस टी– 2011 जगदलपुर, छत्तीसगढ़ में 28 फरवरी से 1 मार्च 2011 तक आयोजित।

कंज्यरियन्स पर राष्ट्रीय समीनार, आइ एफ जी टी बी, कोयम्बटूर में 3 और 4 मार्च 2011 तक आयोजित।

''वन आनुवंशीय संसाधन'' पर दूसरी राष्ट्रीय कार्यशाला, 8 और 9 मार्च 2011 तक।

काष्ठ विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी अनुसन्धान में प्रगति : वर्तमान प्रवृत्तियां भविष्य की चुनौतियां तथा सुअवसर, पर राष्ट्रीय सेमीनार, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 9 और 10 मार्च 2011 तक आयोजित।

''वन आनुवंशीय संसाधन प्रबंधन नेटवर्क की सत्र वद्धीकरण की रणनीतिया'', पर परामर्शी कार्यशाला, वन आनुवंशिकी और वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा 9 और 10 मार्च 2011 को आयोजित।

राजभाषा वैज्ञानिक गोष्ठी, रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर में 10 और 11 मार्च 2011, पृष्ठ सं. 32 और 36 ए।

''कम्प्यूटेश्नल जीवविज्ञान और अनुप्रयोग'' पर राष्ट्रीय समीनार। कार्यशाला, भरथियार विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर में 11 मार्च 2011 को आयोजित की गई।

''यू के इंडिया सहयोगात्मक वन भूमि उपयोजन पुनर्स्थापन परियोजना'' पर प्रतिनिधि के रूप में राज्य स्तरीय कार्यशाला। उत्तराखण्ड वन विभाग द्वारा मंथन सभागार, राजपुर रोड, देहरादून में 13 मार्च 2011 को आयोजित।

''हरित रसायन शिक्षाः सतत् विकास हेतु आवश्यकता'' पर सम्मेलन। एच एन बी गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल) में 22 और 23 मार्च 2011 को आयोजित।

प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा पर राष्ट्रीय कार्यशालाः अतीत, वर्तमान और भविष्य। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर में 23 और 24 मार्च 2011 को आयोजित।

''पादप और लोग'' पर राष्ट्रीय सम्मेलन। ककातिया विश्वविद्यालय, बारेंगल में 29 और 30 मार्च 2011। इस सम्मेलन में ''प्रजाति वनस्पति विज्ञान, मानव कल्याण और जैवविविधता संरक्षण के आवश्यक उपाय'', पर प्रलेख भी प्रस्तुत किया गया।

''सदषित मृदा का जीवविज्ञानीय उपचार'' पर एक दिवसीय कार्यशाला। तमिलनाडु वन विभाग की अनुसन्धान शाखा द्वारा 25 मार्च 2011 को आयोजित।

केंद्रीय भूमिजल बोर्ड, जयपुर द्वारा जल प्रबंधन प्रशिक्षण सी ए जेड आर आई, जोधपुर में 29 मार्च 2011 को आयोजित।

खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय सुधार के लिए तीसरी कीट विज्ञान कांग्रेस। कीट विज्ञान प्रोत्साहन एवं कीटविज्ञान कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा 18 से 20 अप्रैल 2011 तक आयोजित ।

अनुभवों का आदान–प्रदान करने हेतु कार्यशाला, अट्टपैडी हिल्स एरिया विकास सोसाइटी, अगाली केरल में 21 मई 2011 को आयोजित।

सुरभित तेल, इत्रसाजी तथा गंध–चिकित्सा पर प्रशिक्षण कार्यशाला। एफ एफ डी सी, कन्नौज के साथ, वन अनुसन्धान संस्थान में संयुक्त रूप से 31 मई से 4 जून 2011 तक आयोजित।